70

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No..............

Sr. No. of Question Paper : 3480 **A**

Unique Paper Code : 12051602

Name of the Paper : हिंदी निबंध और अन्य गद्य विधाएं

Name of the Course : B.A. (H) –Hindi – CBCS

Semester : VI

समय : 3 घण्टे पूर्णांक : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. निम्नलिखित गद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

(क) "भारतमित्र संपादक! जीते रहो- दूध बताशे पीते रहो। भांग भेजी सो अच्छी थी। फिर बैसी ही भेजना। गत सप्ताह अपना चिट्ठा आपके पत्र में टटोलते हुए 'मोहन मेले' के लेख पर निगाह पड़ी। पढ़कर आपकी दृष्टि पर अफसोस हुआ। पहली बार आपकी

P.T.O.

बुद्धि पर अफसोस हुआ था। भाई! आपकी दृष्टि गिद्ध की-सी होना चाहिए, क्योंकि आप संपादक हैं। किंतु आपकी दृष्टि गिद्ध की-सी होने पर भी उस भूखे गिद्ध की-सी निकली जिसने ऊंचे आकाश में चढ़े चढ़े भूमि पर एक गेहूं का दाना पड़ा देखा पर उसके नीचे जो जाल बिछ रहा था वह उसे न समझा यहां तक कि उस गेहूं के दाने को चुगने से पहले जाल में फंस गया।"

अथवा

"ग़लतीवश, मोहवश, दुर्भाग्यवश जब से हमने गलितांग को अपना अंग जानकर काट फेंकने से इंकार कर गले से लगाना शुरू किया है, तभी से विष सारे शरीर में व्याप्त हो गया है। अब से पचास-साठ वर्ष पहले अखिल-भारतीय स्तर पर सहस्त्र-सहस्त्र ऐसे ब्रह्मराक्षस पैदा हुए थे जिन्होंने कुकर्मों के स्लो-पॉइजन द्वारा मारते-मारते सनातन धर्म को मार ही डाला! इस पूर्णता से वह सनातन धर्म तो अब पुनः जागने-जीने वाला जिसके सराना ब्राह्मण लोग थे। ब्राह्मण-कुल में मैं भी पैदा हुआ हूं। कोई पूछ सकता है कि सनातन धर्म या ब्राह्मण धर्म के इस विनाश पर मेरी क्या राय है।"

(ख) "समस्या यही हैं कि आप अपनी कृतियों को कम-से-कम कितने पुरस्कार पर दान दे सकते हैं? आप की कृतियों के साथ ही उस उत्कृष्ट कवि-हृदय को कोई पुरस्कार तो क्या देगा पर

रायसाहब 'पत्रं-पुष्पं-फलं' से सेवा करने के लिए प्रस्तुत हैं। उनका प्रकाशन-कार्य अभी नया हैं अतः पुरस्कार के मामले में वह एकाएक कलकत्ता और बंबई के प्रकाशकों का मुकाबिला नहीं कर सकते, फिर भी आप जो पुरस्कार उचित समझते हो, लिखें। अविलंब किन शर्तों पर आपकी कृतियों का अधिकार मिल सकता हैं। अवश्य लिखिए।"

अथवा

"इस विचार को अब तक भिन्न-भिन देशों में कितना क्रियात्मक रूप मिल चुका है यह प्रत्येक जिज्ञासु को ज्ञात होगा। पश्चिमीय तथा पूर्वीय जगत देशों में स्त्रियों ने उन बेड़ियों को काट डाला है जिनमें पुरुषों ने बर्बरता के युग में उन्हें बांध कर अपने स्वामित्व का क्रूर प्रदर्शन किया था। उन देशों की महिलाएं राजनीतिक तथा सामाजिक दोनों ही प्रकार के अधिकारों द्वारा अपनी शक्तियों का विकास कर, गृह तथा बाह्य संसार में पुरुषों की सहयोगिनी बनकर अपने देश और जाति के उत्कर्ष का कारण बन रही हैं, अपकर्ष का नहीं।" (8+7=15)

2. 'जातियों का अनूठापन' निबंध की मूल संवेदना लिखिए। (15)

अथवा

'मजदूरी और प्रेम' निबंध की तात्विक विवेचना कीजिए।

3. 'भारतवर्ष की सांस्कृतिक समस्या' निबंध का मूल कथ्य स्पष्ट कीजिए। (15)

अथवा

'बैष्णव की फिसलन' निबंध की प्रासंगिकता पर प्रकाश डालिए।

4. 'अपनी खबर' आत्मकथा का संक्षिप्त सार प्रस्तुत कीजिए। (15)

Dupli

अथवा

जीवनी के तत्वों के आधार पर 'निराला की साहित्य साधना' (नए संघर्ष) की समीक्षा कीजिए।

5. 'अथातो घुमक्कड़ जिज्ञासा' यात्रा वृत्तांत की समीक्षा कीजिए। (15)

अथवा

रेखाचित्र के तत्वों के आधार पर 'सुभान खां पाठ का मूल्यांकन कीजिए।

B.A(H)